अनुभव राज

अनुभव राज
जन्मतिथि- 12/08/2004
जन्मस्थान- मुज़फ़्फ़रपुर , बिहार
पता- शशि भवन, आज़ाद कॉलोनी, रोड-3
माड़ीपुर, मुज़फ़्फ़रपुर, प्रधान डाकघर, बिहार-842001
शिक्षा- डी एल एड (प्रथम श्रेणी)
स्नातक हिंदी (प्रतिष्ठा) में अध्ययनरत ,

पुस्तक -चिड़ियों का स्कूल (बाल कविता संग्रह), अभिधा प्रकाशन, वर्ष 2022

प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट, छपते छपते, हस्ताक्षर, अभिनव बालमन, बाल किरण, प्रेरणा अंशु, अमेरिका से प्रकाशित पत्रिका सेतु, काव्यांजलि, सुवासित, साहित्य सुधा, पद्यपंकज, साहित्य सुषमा ई पत्रिका, नटखट चीनू, मालंच, सच्चा दोस्त, सिटी फ्रंट अखबार में रचनाएँ प्रकाशित
अन्य - शतरंग साझा संग्रह , सा रे ग म प, हिंदी विभाग (BRABU) की पत्रिका " नया प्रस्थान " में कविताओं का प्रकाशन,' नयी सदी के स्वर , भाग 3' आदि
सम्मान- श्री हिंदी पुस्तकालय समिति, डीग द्वारा श्री ग्यासिराम गोयल हिंदी बाल साहित्य सम्मान 2021, स्पार्क ऑफ किलकारी 2022, डॉ० ब्रजनंदन वर्मा शिखर बाल साहित्य सम्मान 2023, विद्यादेवी खन्ना बाल साहित्य सम्मान 2023, अदबी उड़ान विशिष्ट साहित्यकार सम्मान 2023 , बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन,पटना द्वारा विशेष प्रतिभाशाली किशोर सम्मान 2024 आदि
विशेष-1. NCERT की कक्षा दूसरी की पाठ्यपुस्तक सारंगी में 'मां ' कविता शामिल
2. राज्य निःशक्तता आयुक्त द्वारा एक दिन का कमिशनर बना
3. दूरदर्शन पर काव्य पाठ
4. कई प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करना (बालमन फाउंडेशन द्वारा 'मेरी माँ' प्रतियोगिता मे द्वितीय स्थान)6. रचनात्मक लेखन कार्यशाला में साधनसेवी की भूमिका में
अभिरुचि- संगीत, पेंटिंग, पर्यटन, कविताएं करना

ईमेल- anubhvraj808@gmail.com
मो- 8084505505

प्रार्थना

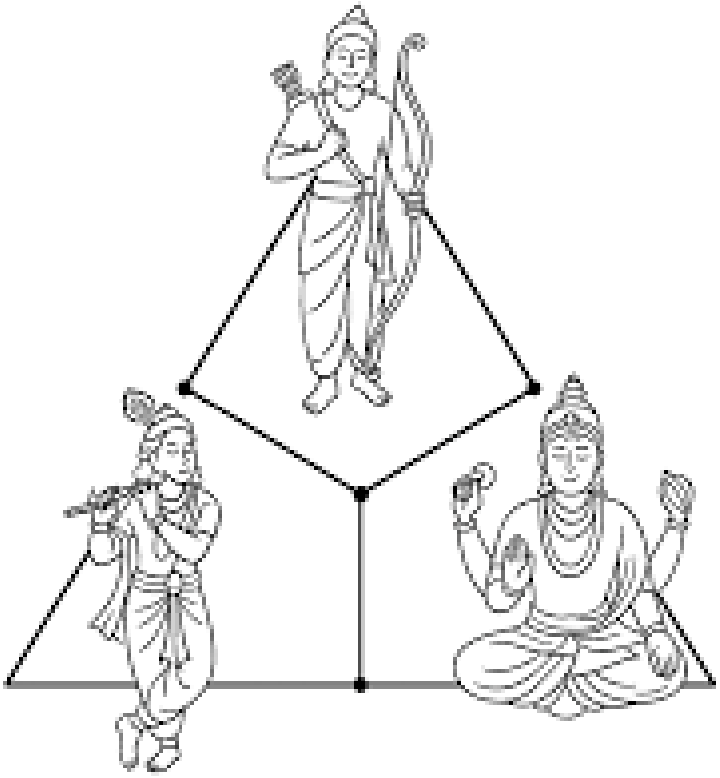

मेरे भगवन मुझको ऐसी
बल बुद्धि और हिम्मत दो

चल न पाऊँ पांव से तो क्या
हृदय तरंगित हो मुझमें
मिले सभी को मंज़िल अपनी
ऐसा रस्ता हो मुझमें
कभी शिथिल न होने पाऊँ
ऐसी गति और बरकत दो।

मेरे भगवन मुझको ऐसी
बल बुद्धि और हिम्मत दो।।

किसी के तीखे वचनों को सुन
घृणा न मुझमें आये
अति प्रशंसा सुनकर मन में
अहंकार न छाए
दिलों पे सबके राज करूँ मैं
ऐसी करुणा किस्मत दो।

मेरे भगवन मुझको ऐसी
बल बुद्धि और हिम्मत दो।।

अपनी शर्तों पर जीने की
आज़ादी हो जीवन में
सम्बन्धों उम्मीदों के भी
फूल खिले हों गुलशन में
सपने पूरे करूँ सभी के
ऐसी युक्ति, शोहरत दो।

मेरे भगवन मुझको ऐसी
बल बुद्धि और हिम्मत दो।।

माँ

माँ तुम कितनी भोली भाली
कितनी प्यारी प्यारी हो
दिल से सच्ची, मिसरी जैसी
सारे जग से न्यारी हो

मेरे मन में जोश तुम्हीं से
तुमसे ही प्रकाश
मुझमें साहस तुमसे आता
तुमसे ही विश्वास

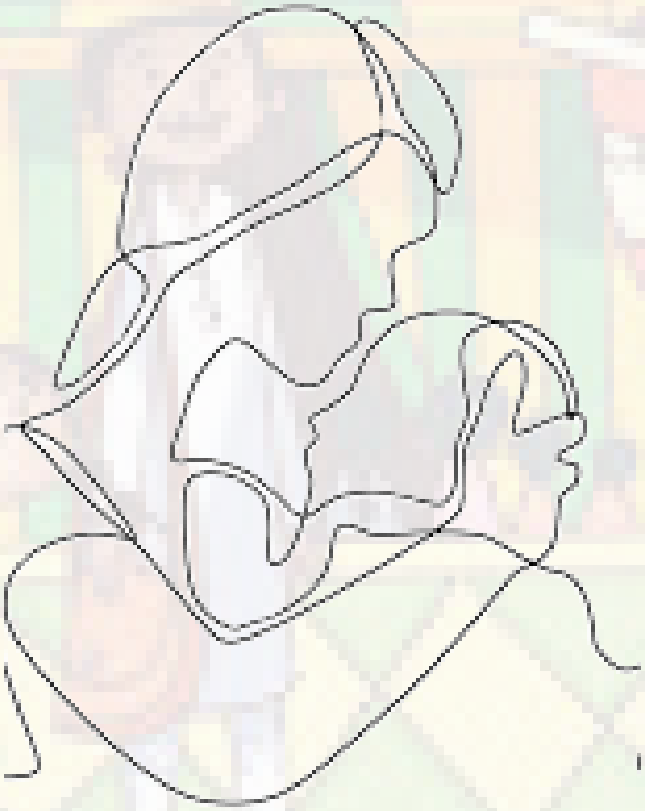

मेला

मेले में हम जब भी जाते
चाट पकौड़ी आइस्क्रीम खाते

कहीं गोलगप्पों का है रेला
कहीं है जादूगर अलबेला
कहीं लगा है जूस का ठेला
कहीं किताबों का है मेला

कहीं खिलौने, कपड़े वाला
बाँसुरी कहीं बजाने वाला
कहीं गुब्बारे, झूले वाला
कहीं निशाने मारने वाला

कहीं नाच कठपुतली का तो
कहीं लोकगीत बजता है
कहीं टेंट सर्कस का है और
कुआं मौत का दिखता है

कहीं पॉपकॉर्न भुट्टा सिंकता
कहीं अचार और पापड़ बिकता
कहीं दुकानें चूड़ी वाली
कहीं सजावट दीपों वाली

मेले में हम धूम मचाते
खुश होकर घर वापस आते

तितली आई

रंग बिरंगी तितली आई
सब फूलों पे मस्ती छाई

बोली सुंदर पंख हैं मेरे
रंग बिरंगे ख़ूब सजीले

खुशबू मुझको अच्छी लगती
किलकारी ही सच्ची लगती

देखो मुझको उड़ने दो तुम
आसमान को छूने दो तुम

घड़ी

दीवार टंगी यह गोल घड़ी
टिक टिक करती रहती है
कभी न रुकती हरदम चलती
टिक टिक टिक टिक करती है

सुई बड़ी मिनट दिखलाती
घण्टे बताती छोटी
सबसे पतली सेकंड बताती
वक़्त करे न खोटी

समय बाँट कर काम करें गर
कभी न रुकने पाएंगे
हरपल नई मंज़िल को छूते
आगे बढ़ते जाएंगे

चिड़ियों का स्कूल

देखो अजब अनोखा प्यारा
चिड़ियों का स्कूल
खुला गजब जंगल में न्यारा
चिड़ियों का स्कूल

बन्दर ढोल बजाता आया
घर घर यह समझाया
छोटी नन्हीं चिड़ियों को न
समझो घर की धूल
देखो अजब अनोखा प्यारा
चिड़ियों का स्कूल

कोयल मीठे गीत पढ़ाती
गौरैया मेहनत सिखलाती
तोता मैना संग तीतर हैं
पढ़ने में मशगूल
देखो अजब अनोखा प्यारा
चिड़ियों का स्कूल

शांति पाठ कबूतर गाए
मोर भी हर्षित नाच सिखाए
बत्तख उल्लू कौआ पढ़ते
सब शैतानी भूल
देखो अजब अनोखा प्यारा
चिड़ियों का स्कूल

फुदक -फुदक कर चिड़िया आ
चहक- चहक कर गाती जा
सदा उड़े तू आसमान में
शाखों पर ले झूल
देखो अजब अनोखा प्यारा
चिड़ियों का स्कूल

किताब हूँ मैं

मैं वाणी ग्रंथ उपनिषद की
बात बाइबिल कुरान की
मैं ज्योति हूँ अनुशासन की
मर्यादा नीति ज्ञान की

मुझसे ही जगता मानव में
विवेक धर्म अभिमान
मुझसे ही पलते मानव में
सपने और उड़ान

मैं कहानी दादी नानी की
मैं प्रेम का संदेश
मेरे पन्नों पे लिखा है
मानवता का उपदेश

मुझको पास रखो बच्चो
मैं हूँ तुम्हारा मित्र
हर पल तुम्हारे साथ रहूँ
जैसे गुल और इत्र

अच्छी आदत

एक दिन चूहा हुआ बीमार
ताप चढ़ा था एक सौ चार

चुहिया जा डॉक्टर ले आई
डॉक्टर ने फिर सुई लगाई

तरह तरह के जाँच किये
घर से नमूने पाँच लिए

बोले घर को साफ रखो
पानी को न जमा रखो

हाथ धो कर मास्क लगाओ
सबको दो गज दूर बिठाओ

अच्छी आदत ये अपनाओ
रोगों से फिर मुक्ति पाओ